Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-IV APRIL 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

नाटककार डॉ. नरेन्द्र मोहन

प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
वसुंधरा कला महाविद्यालय, जुले सोलापुर, (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

हिंदी के वर्तमान प्रयोगशील एवं प्रयोगधर्मी नाटककारों में डॉ. नरेन्द्र मोहन का स्थान शीर्षस्थ है । मूलतः कवि के रुप में अपनी विशिष्ट पहचान बनानेवाले डॉ. नरेन्द्र मोहन ने नाटक, आलोचना, डायरी आदि विभिन्न विधाओं में लेखन कर हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया है । डॉ. नरेन्द्र मोहन का जन्म 30 जुलाई, 1935 ई. में अखंड भारत के लाहोर शहर में हुआ । उनके पिताजी अध्यापक एवं कवि थे । जिनका प्रभाव डॉ. नरेन्द्र मोहन के स्वभाव पर पडा है । स्वाधीनता के बाद 19 अगस्त, 1947 को वे माता–पिता के साथ लाहोर से अमृतसर आए । उन्होंने बचपन में भारत–पाकिस्तान विभाजन के समय देश में होनेवाले दंगे–फसाद, हिंसाएँ, मार–काट, अत्याचार आदि जैसे हृदय विदारक दृश्य देखें जिनका उनके बाल मन पर गहरा आघात हुआ ।

डॉ. नरेन्द्र मोहन ने 1952 ई. में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की । बी.ए. हिंदी ऑनर्स में स्वर्ण पदक प्राप्त किया । 1966 ई.में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच्.डी. की उपाधि से अलंकृत हुए । 1958 ई. में लुधियाना के खालसा महाविद्यालय में प्राध्यापक के रुप में नियुक्त हुए । पंजाब के विभिन्न महाविद्यालयों में सात वर्ष अध्यापन करने के उपरांत 1 जनवरी, 1967 में दिल्ली के श्री. तेगबहादुर खालसा महाविद्यालय में नियुक्त हुए । सन 1988 ई. से दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापन करना प्रारंभ किया । विभाग के शोध कार्य एवं विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रुप से सम्मिलित होते रहे । पीएच्.डी. के शोध निर्देशक के रुप में कार्य कर शोध कार्य मे अपना उल्लेखनीय योगदान देते रहे हैं ।

डॉ. नरेन्द्र मोहन अपनी सृजनात्मक और आलोचनात्मक प्रवृत्ति के कारण 1960 से ही हिंदी साहित्य जगत में प्रसिद्ध हो चुके थे । अध्ययन–अध्यापन–अनुसंधान तथा साहित्य सृजन के अलावा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं । उन्होंने 'संचेतना', 'उत्तरा' जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन किया है । उनकी कहानियों पर 'उजाले की ओर' यह 26 कडियों का धारावाहिक दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ है । बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ. नरेन्द्र मोहन के संदर्भ में प्रस्तुत कथन है, ''उनका व्यक्तित्व एक विशाल बरगद के पेड़ के समान है । जिसकी जडे दूर तक गहराई में धंसी हुई होती हैं । जिसकी टहनियॉ दूर तक फैली होती है। जो सबको छाया देता है । यही उसका धर्म भी होता है । बहनेवाली नदी अपने प्रवास से और जल से अपने तट की जमीन को गीला करती है । जो प्यासे हैं उनकी प्यास बुझाती है क्योंकि नदी का धर्म है बहना और प्यासों की प्यास बुझाना । ये दोनों उपमाएँ नरेन्द्र मोहन के लिए सार्थक हैं ।''[1] उनके स्वभाव में अत्यंत सादगी और खुलापन है । गंभीर रहनेवाले डॉ. नरेन्द्र मोहन मितभाषी एवं अत्यंत संवेदनशील हैं । उनके साहित्य के माध्यम से उनकी विद्वत्ता एवं श्रेष्ठता का परिचय मिलता है ।

डॉ. नरेन्द्र मोहन का रचना संसार–

काव्य संग्रह (हिन्दी) :

इस हादसे में (1975), सामना होने पर (1979), एक अग्निकांड जगहें बदलता (1983), हथेली पर अंगारे की तरह (1990), संकट दृश्य का नहीं (1993), एक सुलगती खामोशी (1997)

काव्य संग्रह (पंजाबी) :

दृश्य बदलते होय (1979)

नाटक (हिन्दी) :

सींगधारी (1988), कहै कबीर सुनो भाई साधो (1988), कलंदर (1991), नो मैंस लैण्ड (1994), अभंग गाथा (2000), मिस्टर जिन्ना (2005), मंच अँधेरे में (2009)

नाटक (पंजाबी) :

पगले (1991), सींगधारी (1991), कलन्दर (2000)

आलोचनात्मक पुस्तकें :

आधुनिक हिन्दी कविता में अप्रस्तुत विधान (1972), आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ (1973), कविता की वैचारिक भूमिका (1978), समकालीन कविता की पहचान (1978), आधुनिकता के संदर्भ मे हिन्दी कहानी (1978), पंजाब के लोकगाथा गीत (1979), शास्त्रीय आलोचना विदाई (1991), समकालीन कविता के बारे में (1994), बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध : हिन्दी कहानी (1996)

संपादित पुस्तके :

आधुनिक हिन्दी उपन्यास (1975), विद्रोह और साहित्य (1974), सिक्का बदल गया (1975), लम्बी कविताओं का रचना विधान (1976), कहीं भी खत्म कविता नहीं होती (1978), विचार और लहू के बीच (1980), प्रेमचंद का कथा–साहित्य (1980), संघर्ष, परिवर्तन और साहित्य (1984), भारत विभाजन : उर्दू की श्रेष्ठ कहानियॉ (1984), भारत विभाजन : हिन्दी की श्रष्ठ कहानियॉ (1984), खोई हुई खुशबू : पंजाबी की श्रेष्ठ कहानियॉ (1984), सआदत हसन मंटो के नाटक (1991), सआदत हसन मंटो की कहानियॉ (1992), समकालीन हिन्दी कहानियॉ–खंड–1 (1994), बीसवीं शताब्दी : लम्बी कविताएँ (1996), समकालीन हिन्दी कहानियॉ–खंड–2 (2000)

अन्य सृजनात्मक पुस्तकें :

दृश्यांतर (1985), एक नदी है रचना (1995), बात से बात चले (2000)

नाटककार डॉ. नरेन्द्र मोहन की नाटय कृतियों का संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है।

1) सींगधारी (1988) :

1988 में प्रकाशित 'सींगधारी' नाटक डॉ. नरेन्द्र मोहन का प्रथम नाटक है जो प्रारंभ में 1984 ई. में नुक्कड नाटक के रूप में चंदीगढ और राहतक में हुआ था। यह नाटक 'ऐन वक्त पर' शीर्षक से 'संचेतना' पत्रिका में और 'दृश्यांतर' पत्रिका में 'सींगधारी' नाम से प्रकाशित हुआ था। इसका प्रथम मंचन 6 मार्च 1985 में 'ऋतम्बरा' द्वारा श्री राम सेंटर, तलघर, नई दिल्ली की ओर से हुआ था। प्रस्तुत नाटक का पंजाबी भाषा में अनुवाद हुआ है।

'सींगधारी' छोटे–छोटे आठ दृश्यों में विभाजित है। इसमें लोककथा का आधार लेकर वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक विसंगतियों पर कडा प्रहार किया गया है। नाटक में अभिव्यक्त राजा भ्रष्ट एवं स्वार्थी राजनेताओं का प्रतीक है जो सामान्य जनता का शोषण करता है। नाटककार कहते हैं कि आज के राजनेता, राजा की तरह सींगधारी होते हैं। उनका विरोध करनेवाले लोगों का सर्वनाश करते हैं। स्वतंत्र भारत के राजनेता अपने अस्तित्व और सत्ता को बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं। वे जनता के सामने अहिंसा और आदर्श की बातें करते हैं। किंतु अपने स्वार्थ की पूर्ति में बाधा बननेवाले लोगों की हत्या करने से जरा भी कतराते नहीं है। भारतीय जनतंत्र में राजनेताओं के साथ प्रशासकीय अधिकारी, सेठ, साहुकार, कोतवाल, पटवारी, हवलदार आदि सभी सींगधारी है। ये सभी उनके रास्ते में आनेवाले लोगों को अपने सींगों से लहूलुहान कर मिटा देते हैं। नाटक में नाई, बॉसुरीवादक और पत्रकार शिव सत्य के लिए लड़ते हैं। सींगधारी राजा उनकी जीवन यात्रा

समाप्त कर देता है। नाई और बॉसुरीवादक की हत्या होती है तो पत्रकार शिव को झूठे केस में फॅसाकर फॉसी की सजा दी जाती है। सींगधारी सामान्य जनता को पशु बनाकर रखना चाहते हैं। तानाशाही निर्माण कर सामान्य जनता का शोषण करते हैं। ''नरेन्द्र माहन राजनीति की गिरावट, षड़यंत्र, छाल को बखूबी उजागर करने में समर्थ हुए हैं, वहीं दूसरी ओर सामान्य जन पर होनेवाले उत्पीडन तथा बेबसी को भी सार्थक अभिव्यक्ति दे सके हैं।''[2]

नाटककार ने पत्रकार शिव के माध्यम से वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक विडंबनाओं के प्रति विद्रोह का स्वर अभिव्यक्त किया है। शिव के अलावा विमल और प्यारेलाल ईमानदारी तथा सच्चाई के रास्ते चलनेवाली भारतीय जनता के रूप में उभरे हैं। नेता जसवंत तरसेम सत्ता का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखायी देता है। आलोच्य नाटक के कथानक में इतिहास और कल्पना का समन्वय किया है। भाषा में क्रियात्मकता है। पात्रों की हॅसी, बॉसुरी, सींग आदि जैसे प्रतीकों का सटीक प्रयोग हुआ है। संवादों में संक्षिप्तता एवं विशिष्टता है। ध्वनि संरचना, प्रकाश व्यवस्था आदि का प्रयोग यथोचित किया गया है।

2) कहै कबीरा सुनो भाई साधो (1988) :

1988 ई. में प्रकाशित 'कहै कबीरा सुनो भाई साधो' यह डॉ. नरेन्द्र मोहन की मध्यकालीन संत कवि कबीर के जीवन पर आधारित महत्वपूर्ण नाटय कृति हैं। नाटक में 15 दृश्य हैं। प्रस्तुत नाटक का प्रथम प्रदर्शन 14–15 नवम्बर, 1986 में पटना में आयोजित रंग शिबिर में राष्ट्रीय नाटय विद्यालय की ओर से देवन्द्र राज अंकुर के निर्देशन में संपन्न हुआ । 5 दिसम्बर 1989 को नाटक का प्रथम भाग दिल्ली दूरदर्शन से प्रदर्शित हुआ। लेकिन बाद में इसके प्रसारण पर प्रतिबंध लगाया गया। कबीर के जीवन पर आधारित मणि मधुकर का 'इकतारे की ऑख' ओर भीष्म साहनी के 'कबिरा खडा बाजार में' इन नाटकों का संदर्भ मिलता है। नाटककार डॉ. नरेन्द्र मोहन ने 'कहै कबीरा सुनो भाई साधो' में कबीर का क्रांतिकारी एवं मानवतावादी रूप उजागर किया । नाटक में कबीर सामाजिक बुराईयों, विसंगतियों और खोखली रूढ़ी; प्रथा–परंपराओं के खिलाफ विद्रोही भूमिका में नजर आते हैं। नाटक में अभिव्यक्त विभिन्न प्रसंगों में कबीर का सामाजिक विडंबनाओं के प्रति संघर्षशील व्यक्तित्व उभरा है। कबीर धार्मिक कर्मकांड, बाहयाचार तथा पाखंडों को खुलकर विरोध करते दिखायी देते हैं। प्रस्तत नाटक में अभिव्यक्त कबीर के चरित्र की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता महसूस होती है। इसीलिए नाटककार ने ''कहै कबीरा सुनो भाई साधो'' नाटक का सृजन किया है। डॉ. नरेन्द्र मोहन नाटक में अभिव्यक्त कथा गायक के माध्यम से कबीर युग में ले जाते हैं। कबीर और उनके साथी काशी में हो रहे अन्याय, अत्याचार, सामाजिक विडंबनाएॅ तथा धार्मिक मिथ्याचारों के खिलाफ लड़ते हैं। धर्म के ठेकेदारों के खिलाफ विद्रोह कर सामान्य जनता में जागरूकता निर्माण करने का प्रयास करते हैं। डॉ. नरेन्द्र मोहन कबीर के माध्यम से सत्य के लिए प्रेम के मार्ग को अपनाने का संदेश देते हैं। नाटककार ने कल्याणकारी भावना अभिव्यक्त की है। नीरू–नीमा की कबीर के प्रति ममता, कबीर की लोई से प्रथम भेंट, मित्रों की ठिठोलियॉ, ऐहिक प्रेम के माध्यम से अध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति आदि प्रसंग नाटक में विशिष्ट महत्व रखते हैं।

'कहै कबीरा सुनो भाई साधो' नाटक ब्रेख्त के नाटकों की तरह घटनात्मक ढॉचे के आधार पर लिखा हुआ है। इसमें फ्लैश बैक शैली का प्रयोग हुआ है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार की अपनी एक नई ताजा शैली विकसित हुई है। प्रतीकात्मकता के संकेत दिए गए हैं। नाटक में नए रग प्रयोग किए गए हैं। ''नाटककार ने कहै कबीर द्वारा निश्चय ही नई रंग शैली, रंग–भाषा, रंग शब्द विकसित किए हैं जिसमें यथार्थवादी शैली और लोक रंग शैली घुल–मिल गए हैं। नाटक में गायक–गायिका के रंग उपयोग के माध्यम से संवेदना तीव्र हुई है। गीत–संगीत का प्रयोग कथ्य को नाटकीयता और रंग दृष्टि को धार प्रदान करता है।''[3] प्रस्तुत नाटक के संवाद संक्षिप्त तथा सरल हैं। कबीर के पद और साखियों का प्रयोग हुआ है। भाषा में सरलता एवं स्पष्टता दिखायी देती है। रंगमंच की साज–सज्जा के लिए आवश्यक निर्देश दिए हैं लेकिन ध्वनि, प्रकाश–व्यवस्था, मंच सज्जा के संकेत न देकर शिल्प पक्ष लचीला बनाया गया है।

3) कलन्दर (1991) :

डॉ. नरेन्द्र मोहन द्वारा रचित 'कलन्दर' नाटक का प्रकाशन 1991 ई. में हुआ । यह दस दृश्यों में विभाजित नाटक है। किंतु इसके पूर्व प्रस्तुत नाटक का प्रथम प्रदर्शन संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली की ओर से उत्तर क्षेत्र नाटय समारोह, इलाहाबाद में 13 फरवरी, 1990 ई. को सम्भव आर्ट ग्रुप, नई दिल्ली द्वारा अखिलेश खन्ना के निर्देशन में संपन्न हुआ था। इसके बाद 20 फरवरी, 1997 में उर्दू ड्रामा फेस्टिवल में अस्मिता, नई दिल्ली की ओर से श्री. अरविंद गौड के निर्देशन में श्री राम सेंटर, नई दिल्ली में इसका प्रदर्शन हुआ था। 'कलन्दर' मध्यकालीन सामंतीय परिवेश की घटना को आधार बनाकर कलन्दरों के जीवन पर लिखा गया नाटक है। स्वतंत्रता पूर्व हमेशा भ्रमण करनेवाले मुस्लिम दरवेश का हठयोग में विश्वास था। किंतु वे ईश्वर भक्ति में किसी प्रकार के बंधन को नकारते थे। यह नाटक मध्यकालीन भारतीय मुस्लिम समाज के कलन्दरों के उत्थान–पतन की गाथा है। सच्चाई के समर्थक कलन्दर अपने उसुलों के लिए लड़ते रहे थे। उनका मुक्त जीवन, लापरवाही, धार्मिक–नैतिक पाबंदियॉ और संघर्षमय जीवन अभिव्यक्त हुआ है। नाटक का मूल उददेश्य राजनीति और धर्म के बीच संघर्ष करते कलन्दरों का जीवन चित्रित करना है। इसमें राजनीतिक षड़यंत्र, चाटूकार सामंत तथा दरबारी सुलतानों के झूठ का पर्दा फाश किया गया है। इस संदर्भ में प्रस्तुत पंक्तियॉ दृष्टव्य हैं, ''नरेन्द्र मोहन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाटक कलन्दर तेरहवीं सदी के अंतिम दौर की धार्मिक व राजनीतिक परिस्थितियों से अवगत ही नहीं कराता, अपितु समाज की जड़ों में बिछे हुए उस भयंकर तंत्र का भी पर्दाफाश करता है, जिसे नंगी ऑखों से देखना प्रायः असंभव होता है।''[4]

आलोच्य नाटक में नाटककार ने शोषण से मुक्ति पाने के लिए विद्रोह और सामाजिक चेतना का मार्ग बताया गया है। नाटक में कई प्रश्न सामने आए हैं। जो आज भी प्रासंगिक हैं। प्रस्तुत नाटक का मूल उद्देश्य राजनीति और धर्म के बीच संघर्ष करते कलन्दरों का जीवन अभिव्यक्त करना रहा है। पात्रों का अंतर्द्वंद्व और आत्मसंघर्ष नाटक में जीवंतता निर्माण करता है। हमीद नाटक का केंद्रीय चरित्र है। उसमें कलन्दरों की विद्रोही प्रकृति, सच के लिए मर मिटनेवाला जज्बा, न्यायप्रियता एवं पराकाष्टा विद्यमान है। वह निर्भिक होकर राजनीतिक षड़यंत्र का भंडाफोड़ करता है। उसमें कलन्दरों की आक्रमकता दिखायी देती है। बुद्धू आम आदमी के प्रतिनिधित्व के रूप में चित्रित हुआ है। सीदी मौला के चरित्र में बेचैनी व्याप्त है जो उसकी अन्तश्चेतना को उभारती है। जलालुद्दीन में भयग्रस्तता दिखायी देती है। यूसुफ, मजीद, सुलेमान, सईदा, शबनम, अमीर खुर्द और मलिक कुची आदि पात्र नाटक में अपना महत्व बनाए रखते हैं।

नाटक का प्रारंभ और अंत एक ही गीत से होता है। गीत–संगीत योजना नाटक की घटना, प्रसंग और पात्रों की मानसिकता स्पष्ट करनी के लिए हुई है। अधूरे वाक्यों का प्रयोग भी हुआ है। पात्रों के अनुसार भाषा के दर्शन होते हैं। संवाद नाटक को गति प्रदान करते हैं।

4) नो मैंस लैंड (1994) :

सन 1994 ई. में प्रकाशित 'नो मैंस लैंड' यह डॉ. नरेन्द्र मोहन का एक सशक्त नाटक है। प्रस्तुत नाटक का प्रथम मंचन साक्षी कला मंच द्वारा 23 फरवरी, 1992 ई. को कृष्णकांत के निर्देशन में श्री. राम सेंटर प्रेक्षागृह, नई दिल्ली में हुआ था। यह नाटक 'टोबा टेकासिंह' कहानो का नाटय रूपांतरण कर नाटय रंग में ढाली गयी कृति है। इसमें 'ठंडा गोश्त' और 'खोल दो' इन मंटो की अन्य दो कहानियों से संदर्भ ग्रहण किए गए हैं। 'नो मैंस लैंड' में भारत–पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी को अभिव्यक्त किया गया है। विभाजन के समय की जीवन विभीषिका, राजनीतिक विसंगतियॉ, धार्मिक आड़ंबर, कुत्सित वृत्तियॉ, हिंसक घटनाऍ, आतंक, मनुष्य में व्याप्त पाशविकता आदि का जीवंत चित्रण हुआ है। प्रस्तुत नाटक पागालों की मनःस्थिति, उनकी भाव भंगिमाओं को अत्यंत सूक्ष्म पद्धति से अभिव्यंजित करता है। नाटककार ने पागल चरित्रों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं की अत्यंत मार्मिक अभिव्यक्ति की है। नाटक के पागल पात्र अपने वर्तमान में अतीत की घटनाऍ याद कर दुःखी जीवन जीते हैं। पागल जैसे लगनेवाले ये पात्र मूर्ख नहीं है। वे देश की आजादी के लिए मर मिटनेवाले सच्चे

देशप्रेमी हैं। जिनको पागलखाने में भर्ती कराया जाता है। नाटक में अभिव्यक्त बिशनसिंह यह पात्र हमेशा खड़ा हुआ अपनी चिंताओं में फंसा हुआ दिखायी देता है। अंधा पागल गायक और बिशनसिंह यादों में जीते हैं। नाटककार उनकी मानसिक विडंबनाओं को खोलते हैं। हीरा का मनोवैज्ञानिक चित्रण अत्यंत बारीकी से किया गया है। वह हर जगह लाश देखने और नंगा होने का अर्थ लाश हो जाना समझता है।

प्रस्तुत नाटक में राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा विसंगतियों पर प्रकाश डाला गया है जो वर्तमान समय में प्रासंगिक है। नाटक के पागल आत्मसंघर्ष करते हुए मानसिक तणाव झेलते हुए विद्रोह करते हैं। पात्रों के माध्यम से नाटककार डॉ. नरेन्द्र मोहन वर्तमान स्थिति के खिलाफ अपनी प्रखर विद्रोही भावना व्यक्त करते हैं। इस संदर्भ में कथन है, ''नाटककार की विद्रोह एवं संघर्ष चेतना अन्तर्सम्बद्ध होकर, उत्तरोत्तर विकसित होते हुए नो मैंस लैंड में केन्द्रित हो गई है। सींगधारी में शिव की हॅसी में जो 'वायलेंस के बीज' नजर आते हैं नो मैंस लैण्ड में आकर यह हॅसी ललकार में बदल जाती है। इतिहास को दोहराने में सन्नाटे को चीरती–ललकारती हुई हॅसी आजादी, नंगा और दंगा के साहचर्य देती है।''[5] आलोच्य नाटक में धर्म, जाति, प्रेम, सहयोग और बंधुभाव की भावना को दृढ करने का प्रयास किया गया है। बिशनसिंह, भजनसिंह, सिराजुद्दीन, हीरा आदि पात्रों के माध्यम से नाटककार सत्य, प्रेम एवं क्रांति के मार्ग का समर्थन करते हैं।

कथा–सूत्र, घटनाएँ, चरित्र–चित्रण, रंग–व्यापार आदि दृष्टि से नाटक की सफलता दिखायी देती है। पागलों के हाव–भाव, उनके मनोवैज्ञानिक चित्रण के लिए प्रलाप शैली का प्रयोग कर नाटक को सजीव बनाया गया है। नाटक की भाषा पात्रानुकूल, मुहावरेदार, चित्रात्मक एवं कल्पनाशील है।

5) अभंग गाथा (2000) :

मराठी के संत कवि तुकाराम के जीवन पर आधारित 'अभंग गाथा' 2000 ई. में प्रकाशित डॉ. नरेन्द्र मोहन का एक महत्वपूर्ण नाटक है। तीन अंकों में विभाजित इस नाटक में ग्यारह दृश्यों का समावेश हैं। इसका प्रथम मंचन कालिदास अकादमी प्रेक्षागृह, उज्जैन में सतीश दवे के निर्देशन में मई, 2000 ई. में हुआ । भारत रंग महोत्सव में भी इसका प्रदर्शन हो चुका है। ''तुकाराम की जिंदगी के दो पक्षों ने नाटककार को नाटक लिखने के लिए बाध्य किया है। पहला है सच के प्रति निष्ठा और उसे अमल में लाने का साहस दूसरा पक्ष है सृजनात्मक शब्द की शक्ति में तुकाराम की आस्था जिंदगी के पर्याय के रूप में शब्द की कल्पना और उसके लिए गहरी छटपटाहट।''[6] 'अभंग गाथा' नाटक मध्ययुगीन समाज में घटित घटनाओं को केंद्रभूमि में रखकर लिखा गया है। ब्राह्मणवादी समाज में शूद्रों की दयनीय अवस्था और उन पर होनेवाले अत्याचार का यथार्थ अंकन कर नाटककार ने मानवता की प्रतिष्ठापना की है। डॉ. नरेन्द्र मोहन ने मध्यकालीन समाज व्यवस्था में व्याप्त महाराष्ट्र के देहू गॉव की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों का यथार्थ अंकन किया है। हिंदू–मुस्लिम संघर्ष, अन्याय, अत्याचार, गुंडागर्दी, दहशत, आतंक के खिलाफ तुकाराम अपने अभंगों के माध्यम से लड़ते हुए समाज परिवर्तन करने का प्रयास करते हैं। तुकाराम गॉव में हो रहे अनाचार के खिलाफ डटकर लडते हैं। तत्कालीन समाज में तुकाराम निर्भय होकर सत्य का आग्रह करते हुए अन्याय के खिलाफ अभंगों के माध्यम से संघर्ष करते दिखायी देते हैं। इसके लिए उन्हें पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक असंतोष सहना पडता है। इन सबके बीच तुकाराम अत्यंत तणावग्रस्त जीवन जीते हैं। अपने तणाव को कम करने के लिए विठ्ठल भक्ति में लीन होकर अभंगों की रचना करते हैं।

प्रस्तुत नाटक के प्रमुख पात्र तुकाराम के दीन–हिन लोगों की मद्द करने के कारण पत्नी रूखमा और बच्चे भूखे रह जाते हैं। तुकाराम खुद के बारे में न सोचकर समाज में व्याप्त दुराचार, जाति–विरोध, भेदभाव, दासता, मार–पीट, उॅच–नीच की भावना आदि को मिटाने हेतु अभंग लिखते रहते हैं। उनका यह रूप देखकर दूसरी पत्नी जिजाई उनका उपालंभ करती है। राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था के द्वारा उनके अभंगों को नष्ट करने का प्रयास किया जाता है किंतु तुकाराम किसी बात की परवाह किए बिना वैराग्य और विद्रोह का मार्ग अपनाकर समाज सुधार हेतु अभंग लिखते जाते हैं। फतेह खॉ और रामेश्वर भट्ट के द्वारा उन्हें सताया

जाता हैं। तुकाराम अभंगों के माध्यम से सांप्रदायिकता, धार्मिकता, कर्मकांड, सामाजिक विसंगतियों को नकारते हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य को आंतरिक शुद्धि से ईश्वर की प्राप्ति होती है। अभंग के माध्यम से तुकाराम ईश्वर से साक्षात्कार करने का प्रयत्न करते हैं।

मध्ययुग में महाराष्ट्र में ब्राह्मणवाद का वर्चस्व था। हिंसक आतंक व्याप्त था। इसे मंबाजी, तानाजी, सदाशिव, दामोदर और रामेश्वर भट्ट के द्वारा दर्शाया गया है। ''डॉ. नरेन्द्र मोहन का नाटक अभंग गाथा तुकाराम के जीवन पर आधारित ऐसी रचना है जो एक स्तर पर तुकाराम के तत्कालीन समाज, उस समाज में तुकाराम के निर्भय, सत्यभाषी, अन्याय के खिलाफ लडनेवाले उग्र और तेजस्वी व्यक्तित्व को चित्रित करता है जो दूसरे स्तर पर हमारे वर्ग विभक्त जाति और अन्तर्विरोधपूर्ण तथा भेदभावग्रस्त विषम समाज के समकालीन संदर्भों को ध्वनित करती है।''[7]

तुकाराम पर केंद्रित यह नाटक ऐतिहासिक और मिथकीय आधार पर लिखा हुआ है। नाटक में चरित्र–चित्रण का समन्वित प्रयोग हुआ है। गायक और गायिका के माध्यम से गीत योजना हुई है। नाटक में फैंटेसी का आभास दिखायी देता है। रंगमंच के लिए नयी और पुरानी शैली का समन्वय किया गया है। दृश्य योजना, प्रकाश योजना, ध्वनि संयोजन आदिका यथोचत प्रयोग हुआ है।

6) मिस्टर जिन्ना (2005) :

मुहम्मद अली जिन्ना के जीवन चरित्र पर आधारित 'मिस्टर जिन्ना' नाटक का प्रकाशन 2005 ई. में हुआ है। दो अंकों में विभाजित इस नाटक में मुहम्मद अली जिन्ना के चरित्र को एक नई दृष्टि से उदारतापूर्वक चित्रित किया गया है। प्रस्तुत नाटक का प्रथम मंचन जे. एन. यू. के ओपन थियेटर में गौड के निर्देशन में 2005 ई. में हुआ है। 'मिस्टर जिन्ना' यह राजनीति में डूबे ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसे भारतीय लोगों ने हमेशा निगेटिव नजर से देखा है। नाटककार ने जिन्ना के राजनीतिक एवं व्यक्तिगत जीवन के बीच की कशमकश को नाटकीय पद्धति से अभिव्यक्त किया है।

नाटक के प्रथम अंक में मिस्टर जिन्ना के पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन का संतुलित चित्रण हुआ है। वे राजनीति में एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली नेता थे। अपने व्यक्तिगत जीवन में भावनात्मक अकेलेपन से जूझते एक भावुक इन्सान थे। इसका परिचय प्रस्तुत नाटक के माध्यम से होता है। बहन फातिमा और बेटी दीना जिन्ना की पारिवारिक जिंदगी के आधारस्तंभ है। बेटी दीना जिन्ना की मर्जी के खिलाफ हिंदुस्थानी पारसी युवक नोयेल वाडिया से प्रेम विवाह करती है। इस बात का उन्हें बेहद दुःख होता है। जिन्ना बेटी से सारे संबंध तोडते हैं लेकिन उसे कभी भूल नहीं पाते हैं। पत्नी रत्ती की मौत के बाद बेटी का प्रेम विवाह कर घर छोडकर चले जाना, बहन फातिमा का जिन्ना के माध्यम से अपनी महत्वाकांक्षाएँ पूरी करना इन घटनाओं से मिस्टर जिन्ना के मन पर अत्यंत गहरा आघात होता है। वे नितांत अकेलेपन, तणाव और निराशा में जीते दिखाई देते हैं। वे अत्यंत स्वाभिमानपूर्वक जिंदगी से जूझते हैं।

नाटक के दूसरे अंक में मिस्टर जिन्ना को पाकिस्तान का सर्वेसर्वा कायदेआजम बना हुआ दिखाया गया है। पाकिस्तान को रक्तरंजित देखकर जिन्ना अत्यंत दुःखी और आहत होते हैं। उन्होंने कभी ऐसे देश की कल्पना नहीं की थी। पाकिस्तान में सभी मजहब के लोग एक साथ भाईचारे की भावना से रहे यह उनका सपना था। दंगे–फसाद, हिंसा और अत्याचार के दृश्य देखकर उन्हें भारत–विभाजन के निर्णय पर अफसोस होता है। मिस्टर जिन्ना सोचते हैं कि बॅटवारे की योजना तो लॉर्ड माउंटबैटन की थी। उसने पत्नी एडविना के जरिए नेहरू को सहमत किया ओर नेहरू से पटेल को राजी किया। जिन्ना को लगता है कि वे एक बार फिर से मात खा गए । जिन्ना अपनी जिंदगी के अंतिम दिनों में गांधी, नेहरू और पटेल से जिरह करते हैं। उन्हें लगता है कि गांधी मौत में भी उन्हें मात दे गए हैं। जिन्ना गांधी को एक डिक्टेटर, कूटनीतिज्ञ मानते हैं । लेकिन उनके अच्छे गुणों की और विशेषताओं की कद्र भी करते दिखायी देते हैं।

मिस्टर जिन्ना एक वकील और राजनीतिज्ञ के साथ साहित्य प्रेमी और कलाप्रेमी थे। नाटक, थिएटर, घुडसवारी, शतरंज तथा बिलियर्ड के शौकिन थे। एक अभिनेता के रूप में उनकी अभिनय कला विकसित थी। वे आधुनिक जिंदगी जीते थे। आलीशान सूट, रेशमी टाई पहनना उनकी आदत थी। उन्हें शराब–सिगरेट से परहेज नहीं था। साबुन से रगड–रगडकर हाथ धोते थे। वे अल्पसंख्यांक हिंदुओं को आरक्षण देने के समर्थन में थे। इन सबका अत्यंत सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत हुआ है। ''नाटककार नरेन्द्र मोहन ने जिन्ना जैसे दुरूह, जटिल, नेगेटिव पात्र की सायकोलोजी संजीदगी और ईमानदारी से उकेरा है छोटे से कैन्वास पर स्पष्ट रंगों में, छोटे–छोटे आसान दृश्यों में, दो टूक शब्दों में। सबसे बड़ी बात यह है कि राजनीति के निरंकुश, नीरस व्यक्तित्व में भी लेखक ने पैने, चुटीले शब्दों का प्रयोग कर विनोदी जुमलों का इस्तेमाल कर गंभीर सिचुएशन को भी इतना दिलचस्प बना दिया है कि दर्शक या पाठक को बोरियत बिल्कुल महसूस नहीं होती।''[8]

'मिस्टर जिन्ना' नाटक की सामग्री एतिहासिक है। प्रस्तुत नाटक में जिन्ना का किरदार अत्यंत सफाई से पेश किया गया है। नाटक में फातिमा, दीना, रत्ती, ड्राईवर हनीफ आजाद, नौकर बदरू आदि पात्र कथानक को गति देते हैं। संवादों के माध्यम से जिन्ना के चरित्र को उभारा गया है। प्रकाश व्यवस्था और फ्लैश बैक पद्धति का प्रयोग सफल हुआ है। शब्द योजना, रंग पद्धति, ध्वनि–संयोजन गीत आदि का सटीक प्रयोग हुआ है। नाटक की भाषा–शैली अत्यंत ताजी है।

7) मंच अंधेरे में (2009) :

'मंच अंधेरे में' 2009 ई. में प्रकाशित डॉ. नरेन्द्र मोहन की सातवीं नाट्य रचना है। दो अंकों म विभाजित इस नाटक का प्रथम प्रदर्शन 23 फरवरी, 1992 ई. में श्री. राम सेंटर, दिल्ली के मुख्य सभागार में हुआ था। प्रस्तुत नाटक में रंगकर्मी परिवार के त्रासद जीवन अंकित किया गया है। इसमें रंगकर्मियों के संकट और समस्याओं को अभिव्यक्त किया गया है। लोकतंत्र में तानाशाही और अराजकता व्याप्त हुई है। राजनीति और प्रशासन में निकम्मे और नाकारे लोगों की भीड़ सी लग गयी है। साम, दाम, दंड से विरोधियों को कुचला जा रहा है। इसे नाटक में व्यक्त पात्र महारानी, राजकुमार और बिल्ला जैसे चरित्रों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। कानून और न्याय की आड में कलाकार रंगनाथ और उसके परिवार के लोगों पर अन्याय किया जाता है। उनकी कला पर पाबंदी लगायी जाती है। लोकतंत्र में कलाकार की स्वतंत्रता बचाना मुश्किल हो गया है। इसे नाटक में अभिव्यक्त कलाकार और कठपुतलियों के माध्यम से दर्शाया गया है। लखक, कलाकार और रंगकर्मी सभी सत्ता के शिकार बनते जा रहे हैं। उन्हें अपनी कला से दूर किया जा रहा है। नाटक के पात्र सुरेखा और सुदर्शन रंगकर्मी को जारी रखने के लिए कई आर्थिक समस्याओं से जूझते हैं। रंगनाथ रंगकर्म को बचाने के लिए कई संताप और संघर्ष झलता है। उसका परिवार भी रंगकर्म की रक्षा करते हुए सत्ता की भयानक त्रासदी को सहता है। सभी रंगकर्मी मानसिक तणाव सहते हैं। डॉ. नरेन्द्र मोहन स्वतंत्र भारत में होनेवाली कलाकारों की दुर्गति पर शोक प्रकट करते हैं।

नाटक के पात्र सुरेखा, सुदर्शन, रंगनाथ, नंदिता आदि पात्र संघर्षमय जीवन जीते हुए विद्रोह करते नजर आते हैं। सुदर्शन का आत्मसंघर्ष नाटक को गति देता है। वह सुरेखा की कामयाबी सहन नहीं करता है। इसलिए मंत्री के द्वारा दी गयी रंग शिखर के चीफ की ऑफर को स्वीकार करता है और सत्ता की ठोकरें खाता है। उसका पत्रकार बेटा कुणाल भी उसकी तरह सत्ता का शिकार बनता है। नाटक में स्वार्थी राजनीति और चापलूस तथा मौका परस्त प्रशासन व्यवस्था पर नाटककार व्यंग्य करते हैं। महारानी के माध्यम से प्रजातंत्र में व्याप्त तानाशाही, शासकीय मानसिकता, मूल्यविरोधी अराजकता और शोषण का यथाथ निरूपण हुआ है। बिल्ला जैसे भ्रष्ट पुलिस अफसर के माध्यम से पुलिस प्रशासन का यथार्थ रूप प्रकाश में आया है। ''मंच अंधेरे में रंगमंच के नए मुहावरें को गढ़ता है। मंच और अंधेरा व्यापक व्यंजनाएँ समेटे हुए आज के संदर्भों में जीवंत हो उठे हैं। व्यवस्था द्वारा बनाए गए सन्नाटे को नरेन्द्र मोहन ने रंग शब्द की शक्ति द्वारा तोड़ने का सफल प्रयास किया है।

कलाकार के अस्तित्व के संकट को, उसके नीजी विवक को, विचार चिंतन को, रचना कर्म और सृजन स्वतंत्रता को, अधिकारों को सभी पक्षों को यह नाटक अनूठी कला में प्रकट करता है।''[9]

प्रस्तुत नाटक में कठपुतलियों और मुखोटों का प्रयोग चुनौती भरा है। नृत्य भंगिमाओं और संगीतात्मक अर्थ–ध्वनियों का प्रयोग सफल हुआ है। रंग संकेत, ध्वनियोजना, प्रकाश योजना का प्रयोग उल्लेखनीय है। फैंटेसी दर्शकों को रंगमंच से जोडती है। नाटक की भाषा नाटककार की सबसे बडी शक्ति के रूप में उभरी है।

निश्कर्ष :

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और मूलतः कवि के रूप में प्रतिष्ठित डॉ. नरेन्द्र मोहन समकालीन प्रयोगधर्मी नाटककार हैं। वे एक सजग नाटककार हैं। इतिहास और कल्पना का समन्वय कर नाट्य सृजन करते हैं। अपनी नाट्य कृतियों के माध्यम से सीधे जनता से जुडकर वर्तमान समाज में व्याप्त विसंगतियों पर कडा प्रहार करते हैं। डॉ. नरेन्द्र मोहन एक साहित्यिक के साथ–साथ सर्वश्रेष्ठ मनुष्य है। इसीलिए उनके समग्र नाटकों में मानवीयता की प्रखर भावना अभिव्यक्त हुई है। उनके सभी नाटक नाटक और रंगमंच के तत्वों की दृष्टि से सार्थक एवं सफल हैं। उन्होंने अपनी नाट्य रचनाओं के माध्यम से हिन्दी नाटक विधा को समृद्ध बनाया है। हिन्दी नाट्य साहित्य के विकास में उनका योगदान अत्यंत सराहनीय है।

संदर्भ संकेत :

1. नाटककार नरेन्द्र मोहन – डॉ. शिवाजी देवरे, पृष्ठ क्र. 9
2. नया परिदृश्य : नरेन्द्र मोहन के नाटक – डॉ. गुरचरण सिंह, पृष्ठ क्र. 5
3. वही, वही, पृष्ठ क्र. 45
4. वही, वही, पृष्ठ क्र. 56
5. वही, वही, पृष्ठ क्र. 90
6. नाटककार नरेन्द्र मोहन – डॉ. शिवाजी देवरे, पृष्ठ क्र. 56
7. वही, वही, पृष्ठ क्र. 98–99
8. नया परिदृश्य नरेन्द्र मोहन के नाटक–डॉ. गुरचरण सिंह, पृष्ठ क्र. 159
9. वही, वही, पृष्ठ क्र. 223

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com